औरतों के साथ बिना हर संघर्ष अधूरा है

कमला भसीन

महिला आंदोलनों में औरतों की भागीदारी के बारे में आप सब 'सबला' में पढ़ते ही आए हैं। अलग-अलग इलाकों में, हर स्तर की औरतें अपने जीवन से संबंधित सवालों पर इकट्ठी होती रही हैं, संघर्ष करती रही हैं। समाज में अपनी जगह और पहचान बनाने के लिए, तरक्की और बराबर के अवसर पाने के लिए, बराबर की व उचित मज़दूरी आदि मुद्दों पर औरतों ने संघर्ष किया है।

पर औरतें सिर्फ़ औरत ही तो नहीं हैं, उनकी और भी कई पहचान हैं, जैसे वे देश की नागरिक हैं, किसी खास धर्म या जाति की सदस्य हैं, किसी खास वर्ग की हैं। वे किसान या मज़दूर भी हो सकती हैं। वे दस्तकार या मछियारा हो सकती हैं और होती हैं। देश की नागरिक व समाज की सदस्य होने के नाते समाज की हर समस्या उनकी भी समस्या है। ऐसा शायद ही कोई मुद्दा है जिसका असर औरतों पर न पड़ता हो।

अगर जंगल कटते हैं, पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता है, फैक्टरियों से पानी और हवा गंदे होते हैं तो औरतों पर भी इस सबका असर पड़ता है। अगर देश में मंहगाई बढ़ती है, हिंसा होती है या प्रजातंत्र खत्म होता है तो इनके असर से औरतें अछूती नहीं रहतीं। अगर ग़रीब किसानों, मज़दूरों, मछुआरों, काश्तकारों का शोषण होता है, उन्हें उचित मज़दूरी या क़ीमत नहीं मिलती तो औरतें

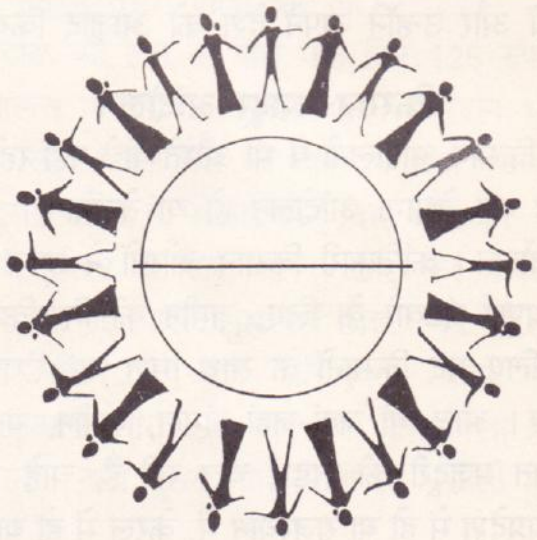

भी कम पाती हैं। इसी वजह से हम देखते हैं कि औरतों ने हर प्रकार के जन आंदोलनों में हिस्सा लिया है, कई जन आंदोलनों की अगुवाई भी की है।

अगर ध्यान से देखा जाए तो अधिकतर जन आंदोलन एक ही सच्चाई का अलग-अलग रूप हैं। उन सब में नज़दीकी रिश्ते हैं क्योंकि अधिकतर आंदोलन न्याय, बराबरी, जन सहभागिता की मांग करते हैं। चाहे ये आंदोलन औरतों, मज़दूरों, मछुआरों के हों या आज़ादी के लिए हों, या प्रकृति को बचाए रखने के हों।

लड़ाई आज़ादी की

भारत की आज़ादी की लड़ाई में हर स्तर पर औरतों की भागीदारी थी। कुछ औरतें नेता थीं

जिन्होंने अपनी उम्र का बहुत बड़ा हिस्सा आज़ादी की लड़ाई में लगा दिया। रानी झांसी, सरोजिनी नायडू, कल्पना दत्त आदि का नाम सबने सुना ही होगा। लाखों, करोड़ों औरतें ऐसी थीं जिनका नाम कहीं नहीं आया पर जिनके काम के बिना आज़ादी नहीं मिल पाती। ये अनाम औरतें बिना डर के लड़ीं और उन्होंने अपने देश को आज़ाद किया।

किसान-मज़दूर आंदोलन

किसान आंदोलनों में भी औरतें पीछे नहीं रहीं, चाहे वह तेभागा आंदोलन हो या तेलंगाना आंदोलन। क्रांतिकारी किसान औरतों ने उपज के न्यायपूर्ण बंटवारे के लिए, ज़मीन की मिलकियत के लिए मर्द किसानों के साथ मिल कर संघर्ष किए। आज भी जहां-जहां जंगल, ज़मीन, या उचित मज़दूरी की लड़ाई चल रही है, चाहे मध्यप्रदेश में हो या राजस्थान में, केरल में हो या बंगाल में, औरतें संघर्षरत हैं। मछुआरों के संघर्षों में भी औरतें साथ ही नहीं, बल्कि आगे हैं। और ऐसा सिर्फ भारत में ही नहीं, पूरी दुनिया में है।

पर्यावरण की लड़ाई

एक आंदोलन जिसमें औरतों ने अगुवाई की है वह है पर्यावरण आंदोलन, क्योंकि बिगड़ते पर्यावरण का ज्यादा खतरनाक असर औरतों पर पड़ता है। जंगल, पानी नहीं बचते तो औरतों को चारे, ईंधन और पानी के लिए अधिक घंटे भटकना पड़ता है। दूषित हवा, पानी और अन्न से परिवार में कोई भी बीमार हो, देखरेख औरतों को करनी पड़ती है। वो खुद भी बीमारी का शिकार होती हैं और बीमार होने पर उनकी सेवा करने वाले कम ही मिलते हैं। इसीलिए औरतों ने हर जगह जंगल, पानी, मिट्टी बचाने के लिए आंदोलनों में ज़ोर-शोर से भाग लिया है—चाहे वह चिपको आंदोलन हो या दक्षिण भारत में अपिको आंदोलन। नर्मदा घाटी को बचाने का आंदोलन हो या टिहरी गढ़वाल को बड़े बांध से बचाने का आंदोलन या इसी प्रकार के केरल, गोआ व अन्य भागों में चल रहे आंदोलन। अमरीका, यूरोप, लतीनी अमरीका, अफ्रीका व एशिया में चल रहे सैंकड़ों पर्यावरण संबंधी आंदोलनों में औरतें जूझ रही हैं और इन संघर्षों को नए आयाम और रूप दे रही हैं।

शांति के लिए और युद्ध व हिंसा के खिलाफ़ किए गए आंदोलनों में भी शुरू से ही महिलाओं ने अगुवाई की है क्योंकि औरत से ज्यादा कौन सहता है युद्ध की हिंसा व हिंसा की मार। औरतों पर अलग-अलग तरह से वार होते हैं। वे युद्धों से अगर बच जाती हैं तो सैनिकों की भूख और वहशीपन का शिकार होती हैं। घर के मर्द ज़खमी होते हैं तो भी औरतों को कम नहीं सहना पड़ता। दुनिया भर में औरतों ने शांति के लिए आंदोलन चलाए हैं और आज भी चला रही हैं। भारत में सांप्रदायिकता व हिंसा के खिलाफ़ चल रहे संघर्षों से औरतें जुड़ी हैं। श्री लंका में चल रहे खून-खराबे को खत्म करने के लिए औरतें आवाज़ उठा रही हैं। इसी तरह बंगलादेश में।

प्रजातंत्र के लिए जो लड़ाइयां चली हैं उनमें भी औरतें पीछे नहीं रही। बर्मा में तानाशाही के खिलाफ़ चल रही लड़ाई की मुख्य नेता श्रीमती सूकी

हैं जो बरसों से जेल में हैं मगर हार मानने को तैयार नहीं हैं। नेपाल और पाकिस्तान में भी प्रजातंत्र के लिए लड़ने वालों में औरतें शामिल थीं।

औरतों की ढाल

अधिकतर मोर्चों में सबसे आगे औरतें होती हैं। वो मर्दों के लिए ढाल का काम करती हैं। यह समझा जाता है कि औरतों पर पुलिस या फौज आसानी से वार नहीं करेगी। पर यह भी देखा गया है कि एक बार मैदान में आने पर औरतें आसानी से पीछे नहीं हटतीं। बंगलादेश की एक बहुत जुझारू किसान औरत से जब पूछा गया कि औरतें पुलिस की लाठी से डर कर भागती क्यों नहीं तो वह बोली, "हम मार खाने से नहीं डरतीं और न ही दर्द से डरती हैं। हम जानती हैं दर्द क्या होता है।" सच है, एक ग़रीब औरत के पास डर का क्या काम, उसके पास खोने को है ही क्या?

आज इन अलग-अलग संघर्षों को जोड़ना और इन सभी को अधिक मज़बूत बनाना बहुत ज़रूरी है। शांति, पर्यावरण, प्रजातंत्र, स्त्री-पुरुष समानता, आर्थिक व सामाजिक न्याय के लिए आज भी संघर्ष ज़रूरी हैं, शायद पहले से भी ज्यादा ज़रूरी। □